RAMANUJAN COLLEGE

(Accredited Grade 'A++' by NAAC)

UNIVERSITY OF DELHI

Kalkaji, New Delhi

भारतम्

भारतीय ज्ञान परंपरा: अध्ययन,अध्यापन एवं अनुसंधान केन्द्र

BHĀRATAM

Bhārtīya Gyān Paraṁparā:
Adhyayan, Adhyāpan Evam Anusaṁdhān Kendra

BHARATAM

Centre for Learning, Illumination and Innovation

Brings

20-day Certificate Course (40 hours)/ Refresher Course

on

“श्रीमद् भगवद् गीता”

प्रबोध एवं प्रासंगिकता

“ŚRĪMAD BHAGAVAD-GĪTĀ”

Prabodha Evam Prāsaṁgikatā

“SHRIMAD BHAGAVAD GITA”

Enlightenment and Relevance

22 December 2023 – 10 January 2024

Time: 4:30 PM - 6:30 PM

All days of the week

Both online and offline mode

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय देश का एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है जो कि अपने उच्चतम शैक्षणिक मानकों, विभिन्न शैक्षिक, सह-शैक्षिक कार्यक्रमों, विशिष्ट संकायों, सफल पुरा छात्रों के साथ साथ अपने अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे के लिए ख्यातिलब्ध है।

अपनी स्थापना से लेकर अब तक विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा में उच्चतम वैश्विक मानकों और उत्कृष्ट परम्पराओं को संवर्द्धित किया है।

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य और राष्ट्र निर्माण के प्रति इसकी प्रतिबद्धता इसके आदर्श वाक्य 'निष्ठा धृति सत्यम्' (समर्पण, दृढ़ता और सत्य) में परिलक्षित होती है।

इसकी स्थापना 1922 ई. में तत्कालीन केंद्रीय विधायिका के अधिनियम द्वारा शैक्षणिक - आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में हुई। उत्तरोत्तर शिक्षण, अनुसंधान और सामाजिक सरोकारों के प्रति समर्पण ने विश्वविद्यालय को एक रोल-मॉडल बना दिया है। विश्वविद्यालय की विजिटर राष्ट्रपति महोदया हैं, उपराष्ट्रपति महोदय चांसलर हैं और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश इसके प्रो-चांसलर हैं।

इसका प्रारम्भ तीन महाविद्यालयों एवं 750 विद्यार्थियों से हुआ। सम्प्रति इसके अंतर्गत 16 संकाय, 80 से अधिक विभाग और लगभग इतने ही महाविद्यालय के साथ यह सात लाख से अधिक विद्यार्थियों वाला भारत का एक अग्रणी विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के 500 से अधिक पाठ्यक्रम अकादमिक और कार्यकारी परिषद द्वारा अनुमोदित हैं, जिनमें से 209 पाठ्यक्रम एन.ए.ए.सी. प्रत्यायन के लिए निर्देशित हैं। महाविद्यालयों में चल रहे अन्य पाठ्यक्रमों का प्रत्यायन भी एन.ए.ए.सी. द्वारा किया जाता है।

विश्वविद्यालय मनसा (विचार), वाचा (भाषण) और कर्मणा (क्रिया) की उत्कृष्टता, अखंडता और अपनी व्यापक विश्व-दृष्टि के कारण देश-विदेश के छात्रों और शिक्षकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

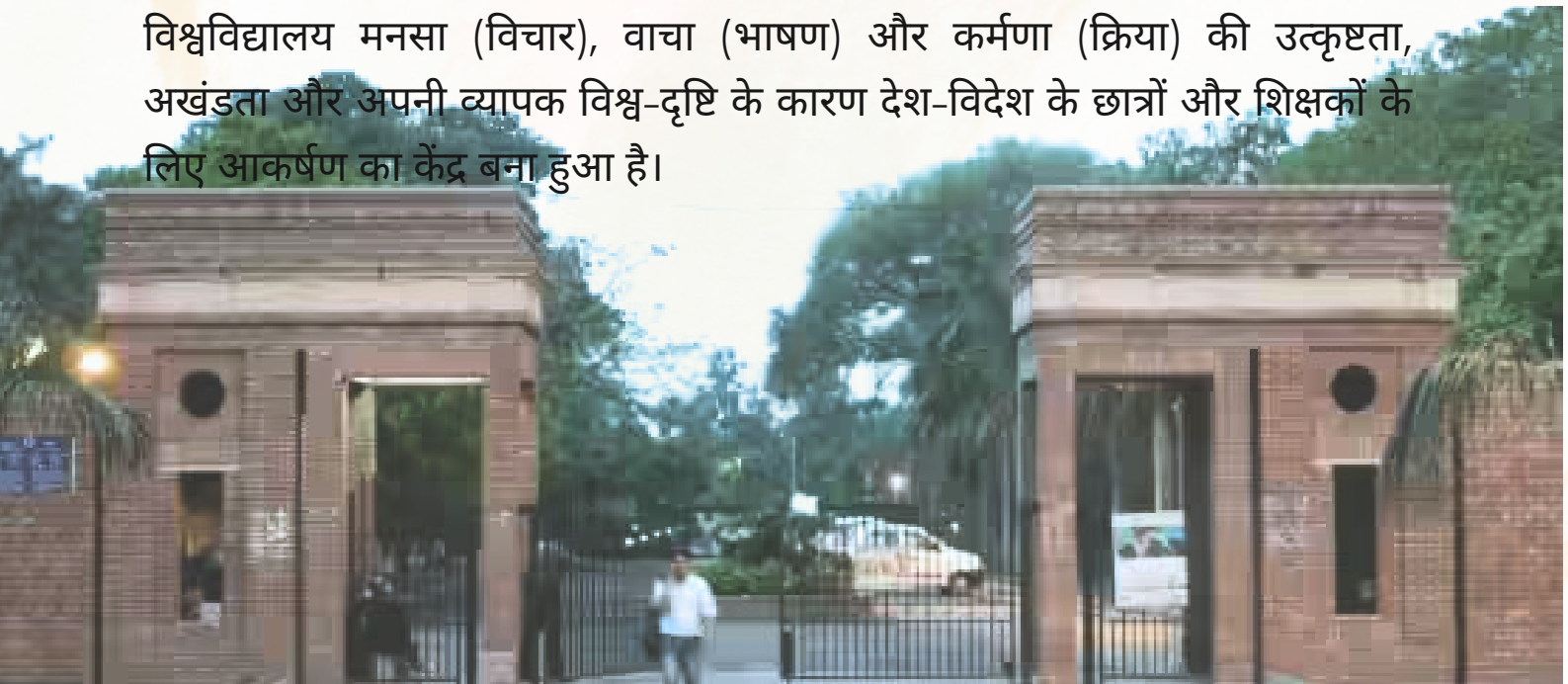

UNIVERSITY OF DELHI

The University of Delhi is a premier university of the country with a venerable legacy and international acclaim for highest academic standards, diverse educational programmes, distinguished faculty, illustrious alumni, varied co-curricular activities and modern infrastructure. Over the many years of its existence, the University has sustained the highest global standards and best practices in higher education. Its long-term commitment to nation building and unflinching adherence to universal human values are reflected in its motto: 'Nishtha Dhriti Satyam' 'निष्ठा धृति सत्यम्' (Dedication, Steadfastness and Truth).

Established in 1922 as a unitary, teaching and residential University by the Act of the then Central Legislative Assembly, a strong commitment to excellence in teaching, research and social outreach has made the University a role-model and trend setter for other universities. The President of India is the Visitor, the Vice-President is the Chancellor and the Chief Justice of the Supreme Court of India is the Pro-Chancellor of the University. Beginning with three colleges and 750 students, it has grown as one of the largest universities in India with 16 faculties, over 80 academic departments, an equal number of colleges and over seven lakh students. Over 500 programmes offered by the University are approved by Academic and Executive Councils, out of which 209 programmes are being considered for NAAC accreditation purposes. The rest being run in colleges are separately accredited. Drawing students and faculty from across India and abroad, the University has emerged as a symbol of excellence, integrity and openness of mansa (thought), vaacha (speech) and karmana (action).

रामानुजन महाविद्यालय

रामानुजन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय का कोंस्टीटुएंट महाविद्यालय है जिसकी स्थापना 1958 में एक सांध्य-महाविद्यालय के रूप में हुई। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) के द्वितीय मूल्याङ्कन चक्र में इसे "ए++" मान्यता दी गई।

दुनिया के शीर्षस्थ गणितज्ञों में से एक, श्रीनिवास अयंगर रामानुजन की प्रेरणा के अनुरूप यह महाविद्यालय समर्पण, परिश्रम और प्रतिबद्धता के आधारभूत मूल्यों का पालन करता है जो कि दिल्ली विश्वविद्यालय के आदर्श वाक्य - निष्ठा, धृति और सत्यम से भी परिलक्षित होता है। रामानुजन महाविद्यालय, 2012 से एक पूर्ण "प्रातःकालीन महाविद्यालय" बन गया है। पिछले एक दशक से, महाविद्यालय विकास के अभूतपूर्व मानक स्थापित कर रहा है।

भविष्य की नई चुनौतियों का सामना करने के लिए महाविद्यालय कई नए पाठ्यक्रमों की शुरूआत के साथ साथ नवीनतम सुविधाओं को प्रदान करने और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। सम्प्रति रामानुजन महाविद्यालय में विभिन्न विषयों के अंतर्गत सोलह स्नातक पाठ्यक्रम संचालित हैं। इसके अलावा, महाविद्यालय को यूजीसी द्वारा दीन दयाल उपाध्याय कौशल केंद्र (2016) और शिक्षा मंत्रालय द्वारा शिक्षण प्रशिक्षण केंद्र (2017) के संचालन की अनुमति प्राप्त है।

इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में अनेक डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स, स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग (एसओएल), नॉन-कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड (एनसीडब्ल्यूईबी), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इगनू) का अध्ययन केंद्र भी संचालित हैं। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ महाविद्यालय का एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित है। यह दिल्ली विश्वविद्यालय की विस्तार योजना के तहत देश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के उच्च शिक्षा संस्थानों से सहयोगरत है।

RAMANUJAN COLLEGE

Ramanujan College, a constituent College of the University of Delhi was established in 1958 as an evening college. The College has been accredited Grade "A++" by the National Assessment and Accreditation Council (NAAC) in its Second Cycle. Inspired by Srinivasa Aiyangar Ramanujan, one of the world's greatest-ever mathematical genius, the College adheres to the core values of dedication, hard work and commitment as encapsulated in the motto of the University of Delhi – Nistha, Dhriti and Satyam.

Ramanujan College, formerly known as Deshbandhu College (Evening), was established by the Ministry of Rehabilitation, Government of India, in the memory of Late Lala Deshbandhu Gupta, a patriot who had dedicated his life to the national freedom struggle. The College is 100% funded by the University Grants Commission (UGC) and has been maintained by the University of Delhi since 1972. The College opened its gate for women students in 1994. In 2010, the Deshbandhu College (Evening) was renamed as the Ramanujan College. The College became a full-fledged day college in 2012.

At present, Ramanujan College offers sixteen undergraduate programmes in different disciplines. Besides this, the college has been awarded the DDU KAUSHAL Kendra (2016) by UGC and Teaching Learning Centre (2017) by the Ministry of Education. The College also offers short-term diploma, certificate, and executive development programmes on contemporary and skill-oriented themes and is also the Study Centre of School of Open Learning (SOL), Non-Collegiate Women Education Board (NCWEB) and Indira Gandhi National Open University (IGNOU) for various courses. The College has also entered into Memorandum of Understanding(s) with foreign universities. It is also working in collaboration with other higher education institutions located in remote areas of the country, under the Vidya Vistaar Scheme of the University of Delhi.

भारतम्: भारतीय ज्ञान परंपरा
अध्ययन,अध्यापन एवं अनुसंधान केन्द्र

भारतम्: भारतीय ज्ञान परंपरा अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान केन्द्र रामानुजन महाविद्यालय के शासी निकाय के सम्मानित अध्यक्ष डॉ. जिगर इनामदार की संकल्पना है। इस केंद्र का उद्देश्य विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्र-बिंदु बनना है। इसके माध्यम से प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के अन्वेषण से पूरी दुनिया लाभान्वित होगी।

यह केंद्र अनुसन्धान और अन्वेषण से प्राप्त महत्वपूर्ण ज्ञान को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने का दु:साध्य कार्य करेगा। यह केंद्र प्राचीन ज्ञान परम्पराओं के अद्वितीय आलोक में समकालीन शिक्षा प्रणाली को भी आलोकित करेगा।

केंद्र का लक्ष्य प्राचीन ग्रंथों और साहित्य के व्यवस्थित अध्ययन के माध्यम से भारतीय मूल्य प्रणाली से संबंधित ज्ञान का प्रसार और संरक्षण करना है। प्राचीन ज्ञान गंगा के मंथन से प्राप्त यह धरोहर, समसामयिक आवश्यकताओं व दीर्घकालीन उद्देश्यों की पूर्ति करेगी।

कहना न होगा कि ज्ञान का यह खजाना न केवल भारत के लिए मूल्यवान है बल्कि सार्वभौमिक महत्व का है। भारतम् के माध्यम से रामानुजन कॉलेज का लक्ष्य भारतीय ज्ञान के अद्वितीय खजाने को समकालीन शिक्षा के ताने-बाने में बुनना है। यह केंद्र ज्ञान सम्बन्धी बहुमूल्य कोष को एकत्रित एवं संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है, साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जायेगा कि यह वैश्विक स्तर पर सुलभ हो।

'भारतम' वर्तमान समय के लिए प्रासंगिक विषयों जो कि राष्ट्र के दीर्घकालिक विकास के लिए आवश्यक हैं, का संवर्धन करके परंपरा और आधुनिकता के बीच की खाई को समाप्त करना चाहता है।

इस केंद्र के बहुमुखी दृष्टिकोण से न केवल ज्ञान का संरक्षण और प्रसार होगा बल्कि शिक्षकों और शिक्षार्थियों के साथ सक्रिय रूप से परस्पर विमर्श का एक मंच भी प्रदान करेगा। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और पाठ्यक्रमों के माध्यम से, भारतम का उद्देश्य प्राचीन ग्रंथों की गहरी समझ और सार्थक बातचीत की सुविधा प्रदान करना है।

BHĀRATAM: Bhārtīya Gyān Paraṁparā
Adhyayan, Adhyāpan Evam Anusaṁdhān Kendra

BHĀRATAM - *Bhārtīya Gyān Paraṁparā: Adhyayan, Adhyāpan Evam Anusaṁdhān Kendra* is the brainchild of Dr. Jigar Inamdar, Respected Chairperson, Governing Body of Ramanujan College. The vision of the Center is to emerge as a focal point of Bhartiya Gyan Parampara across the globe. Bhāratam will outline the areas which are relevant in the contemporary times (युगानुकुल) yet will further enrich our nation (देशनुकुल) in a longer run. The Center aims to disseminate and preserve the knowledge related to the Indian value system through the systematic study of ancient texts and literature.

Driven by the belief that this wealth of knowledge is not only valuable for India but holds universal significance, Bhāratam commits to meticulous documentation and preservation, ensuring that the collected data remains accessible and impactful on a global scale. Ramanujan College, through the Center, aims to weave the unparalleled treasure of Bhartiya Gyan into the fabric of contemporary education. By identifying areas that are not only pertinent to the current times but also contribute to the long-term enrichment of the nation, the Center seeks to bridge the gap between tradition and modernity. Bhāratam's multifaceted approach includes not only preserving and disseminating knowledge but also actively engaging with educators and learners. Through a variety of programs, workshops, and courses on the Indian Knowledge System, Bhāratam aims to facilitate meaningful interactions, fostering a deeper understanding and appreciation of ancient texts. It is through these initiatives that Bhāratam endeavors to be a dynamic hub, facilitating the exploration and appreciation of the rich tapestry of Bhartiya Gyan Parampara, transcending borders and generations.

संकल्पना

"श्रीमद भगवद-गीता" प्रबोध एवं प्रासंगिकता पर 20-दिवसीय सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम, "श्रीमद भगवद-गीता" के पवित्र छंद प्रत्येक मनुष्य के जीवन में युगांतरकारी परिवर्तन करने में सक्षम हैं।

यह पाठ्यक्रम श्रीमद भगवद-गीता के प्रत्येक अध्याय को गहराई से जानने, उसके दार्शनिक प्रत्ययों को प्रस्तुत करता है।

यह पाठ्यक्रम भारतम के उद्देश्य के साथ आवयविक रूप से सम्बद्ध है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित चिंतन के संरक्षण और प्रसार के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

श्रीमद्भगवद-गीता जीवन के लिए एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक है जो कर्तव्य, धर्म और आत्म-बोध के मार्ग पर महत्वपूर्ण, समयातीत सीखों को अपने में समाहित किये हुए है।

इससे जुड़कर, प्रतिभागी न केवल अपनी आध्यात्मिक समझ को समृद्ध करेंगे बल्कि भारत की सांस्कृतिक और दार्शनिक विरासत से भी परिचित होंगे।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्वों को निर्मित और विकसित करना है जिनके पास श्रीमद्भगवद-गीता की गहन व सूक्ष्म समझ हो। इसके माध्यम से प्रतिभागियों को धर्मग्रंथ के दार्शनिक प्रबोध एवं समकालीन जीवन के प्रति इसकी प्रासंगिकता के विषय में अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी।

CONCEPT NOTE

The 20-day Certificate course on **"ŚRĪMAD BHAGAVAD-GĪTĀ": Prabodha Evam Prāsaṁgikatā** unfolds as a transformative journey into the sacred verses of this timeless scripture. Rooted in the essence of Bhartiya Gyan Parampara, the Course endeavors to delve into each adhyaya of the Bhagavad Gita, unraveling its philosophical intricacies and timeless teachings. Through a meticulous examination of the verses, the participants will embark on a deep exploration of the spiritual wisdom encapsulated in this revered scripture.

This course aligns seamlessly with the mission of BHĀRATAM - Bhārtīya Gyān Paraṁparā: Adhyayan, Adhyāpan Evam Anusaṁdhān Kendra, serving as a beacon for the preservation and dissemination of the profound knowledge embedded in Bhartiya Gyan Parampara. Śrīmad Bhagavad-Gītā is a spiritual guide for life that encapsulates significant, timeless lessons on duty, righteousness, and the path to self-realization. By engaging with the teachings enshrined in this text, participants will not only enrich their spiritual understanding but will also connect with the cultural and philosophical heritage of Bharat.

The Course intends to foster the emergence of individuals who possess a deep and nuanced comprehension of Śrīmad Bhagavad-Gītā. Participants will gain insights into the philosophical underpinnings of the scripture, its relevance to contemporary life, and the practical application of its teachings.

श्रीमद् भगवद् गीता: अध्याय

अध्याय संख्या	अध्याय नाम	श्रद्धास्पद वक्ता
पहला अध्याय	अर्जुनविषादयोग	प्रो. (डॉ.) संपदानंद मिश्र
दूसरा अध्याय	सांख्ययोग	प्रो. भारतेंदु पांडे
तीसरा अध्याय	कर्मयोग	प्रो. ओम नाथ बिमली
चौथा अध्याय	ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	प्रो. ब्रजेश पाण्डेय
पांचवां अध्याय	कर्मसंन्यासयोग	प्रो. सच्चिदानंद मिश्र
छठवां अध्याय	आत्मसंयमयोग	डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
सातवां अध्याय	ज्ञानविज्ञानयोग	डॉ. कृष्ण मोहन पांडे
आठवां अध्याय	अक्षरब्रह्मयोग	डॉ. समीर कुमार मिश्र
नवां अध्याय	राजविद्याराजगुह्ययोग	श्री ऋषि कुमार दास
दसवां अध्याय	विभूतियोग	प्रो. सुरेश भल्ला
ग्यारहवां अध्याय	विश्वरूपदर्शनयोग	डॉ. बलदेवानंद सागर
बारहवां अध्याय	भक्तियोग	श्री सुशांत भारती
तेरहवां अध्याय	क्षेत्र-क्षेत्रज्ञविभागयोग	डॉ.सौरभ जी
चौदहवां अध्याय	गुणत्रयविभागयोग	प्रो. (डॉ.) सत्यपाल सिंह
पंद्रहवां अध्याय	पुरुषोत्तमयोग	डॉ. संदीप चटर्जी
सोलहवां अध्याय	दैवासुरसम्पद्विभागयोग	श्री सनोज कुमार
सत्रहवां अध्याय	श्रद्धात्रयविभागयोग	प्रो. गिरीश चंद्र पांडे
अठारहवां अध्याय	मोक्षसंन्यासयोग	प्रो. रमेश बिजलानी

Shrimad Bhagvad Gita: Adhyaya

Adhyaya No.	Adhyaya Name	Distinguished Speaker
Adhyaya 1	Arjuna Viṣhāda Yoga	Prof. (Dr.) Sampadananda Mishra
Adhyaya 2	Sankhya Yoga	Prof. Bhartendu Pandey
Adhyaya 3	Karma Yoga	Prof. Om Nath Bimali
Adhyaya 4	Jnana Yoga	Prof. Brajesh Pandey
Adhyaya 5	Karma Sanyāsa Yoga	Prof. Sachchidanand Mishra
Adhyaya 6	Dhyāna Yoga	Dr. Pramod Kumar Sharma
Adhyaya 7	Vijnana Yoga	Dr. Krishan Mohan Pandey
Adhyaya 8	Akṣhara Parabrahma Yoga	Dr. Sameer Mishra
Adhyaya 9	Rāja Vidyā Yoga	Shri Rishi Kumara Das
Adhyaya 10	Vibhūti Yoga	Prof. Suresh Bhalla
Adhyaya 11	Viśhwarūpa Sandarśhana Yoga	Dr. Baldevanand Sagar
Adhyaya 12	Bhakti Yoga	Shri Sushant Bharti
Adhyaya 13	Kṣhetra Kṣhetrajña Vibhāga Yoga	Dr. Saurabh Ji
Adhyaya 14	Guṇa Traya Vibhāga Yoga	Prof. (Dr.) Satyapal Singh
Adhyaya 15	Puruṣhottama Yoga	Dr. Sandeep Chatterjee
Adhyaya 16	Daivāsura Sampad Vibhāga Yoga	Shri Sanoj Kumar
Adhyaya 17	Śhraddhā Traya Vibhāga Yoga	Prof. Girish Chandra Pandey
Adhyaya 18	Mokṣha Sanyāsa Yoga	Prof. Ramesh Bijlani

महत्वपूर्ण जानकारी:

- 22 दिसंबर 2023 को उद्घाटन सत्र और 10 जनवरी 2024 को समापन सत्र सहित कुल 20 सत्र होंगे।
- 23 दिसंबर 2023 से 9 जनवरी 2024 तक लगातार 18 दिनों में 18 व्याख्यान होंगे।
- व्याख्यान मुख्यत: हिन्दी में होंगे।
- 18 दिनों में शनिवार और रविवार सम्मिलित हैं.
- महाविद्यालय परिसर में प्रतिदिन सायं 4:30-6:30 बजे तक व्याख्यान आयोजित होगा।
- ऑनलाइन प्रतिभागियों के लिए व्याख्यान यूट्यूब पर भी लाइव होंगे।
- समापन सत्र के दौरान प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे।
- प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए सभी सत्रों में भाग लेना अनिवार्य है।
- मूल्यांकन और प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए बहुविकल्पीय परीक्षा आयोजित की जाएगी।

पंजीकरण और भुगतान विवरण

शिक्षक सदस्य, प्रशासनिक कर्मचारी, अनुसंधान विद्वानों, और पाठ्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति को यहां जाकर पंजीकरण करना होगा और **950/- रुपये** (दोनों मोड के लिए) का अप्रतिदेय योग्य शुल्क का भुगतान करना होगा:

ऑनलाइन मोड: https://rcmoocs.in/program/bhagavad-gita-online-mode

ऑफ़लाइन मोड: https://rcmoocs.in/program/bhagavad-gita

सफल पंजीकरण और भुगतान के बाद, प्रतिभागियों को ईमेल के माध्यम से पुष्टि प्राप्त होगी। कृपया ईमेल के स्पैम फ़ोल्डर की जांच करते रहें, क्योंकि पुष्टि ईमेल स्पैम फ़ोल्डर में भी जा सकते हैं। 'व्हाट्सएप' पर प्रतिभागियों के साथ संवाद के लिए एक आधिकारिक समूह बनाया जाएगा। आधिकारिक समूह में शामिल होने का लिंक पुष्टि ईमेल में प्रदान किया जाएगा।

पंजीकरण की समयसीमा: 22 दिसम्बर 2023

Important Information:

- There will be a total 20 sessions, including Inaugural Session on 22nd December 2023 and Valedictory Session on 10th January 2024.
- 18 lectures will take place on successive 18 days from 23rd December 2023 till 9th January 2024.
- The lectures will be primarily in Hindi.
- Saturdays and Sundays are included in the 18 days.
- Timings will be 4:30 - 6:30 pm pm every day in the College premises.
- The lectures will also go live on YouTube for the online participants.
- The certificates will be awarded during the Valedictory Session.
- Attending ALL sessions is mandatory for receiving a certificate.
- An MCQ test will be conducted for assessment purposes and eligibility for the Certificate.

REGISTRATION AND PAYMENT DETAILS

Faculty members, administrative staff, research scholars and anyone who wishes to participate in the course are required to register and pay a **Non-Refundable fee of INR 950/- (for both modes)** by visiting:

ONLINE mode: https://rcmoocs.in/program/bhagavad-gita-online-mode

OFFLINE mode: https://rcmoocs.in/program/bhagavad-gita

After successful registration & payment, the participants will receive a confirmation via email. Please keep checking the spam folder of the email as the bulk email sent may end up in the spam folder. An official group will be made for communication with the participants on "WhatsApp." The link to join the official group will be provided in the confirmation mail.

REGISTRATION DEADLINE: 22 December 2023

उद्घाटन: भारतम् - भारतीय ज्ञान परंपरा

अध्ययन,अध्यापन एवं अनुसंधान केन्द्र

परम पूज्य स्वामी परमात्मानंद सरस्वती

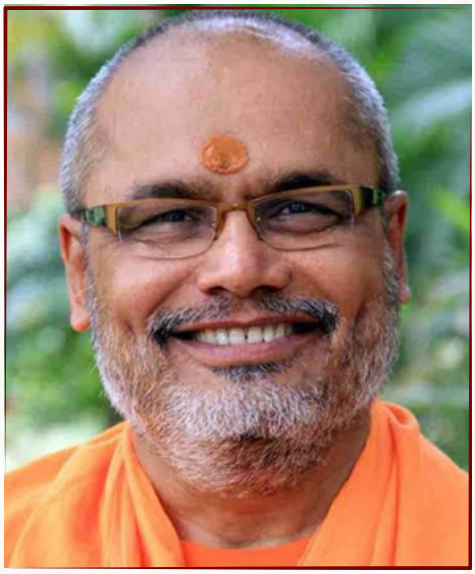

परम पूज्य स्वामी परमात्मानंद जी स्वामी दयानंद सरस्वती के ज्ञान-मीमांसा के अनुयायी और शिष्य हैं। आप दयानंद सरस्वती के दिखलाए मार्ग के अनुरूप वेदांत, संस्कृत और योग के आधिकारिक विद्वान हैं। आपने राजकोट और वडोदरा में अर्श विद्या मंदिर की नींव रखी। स्वामी परमात्मानंद जी अहमदाबाद में स्थित शिवानंद आश्रम के अध्यक्ष भी रहे। 'हिन्दू धर्म आचार्य सभा' के संयोजक और सचिव पद पर रहते हुए आपने विश्व योग दिवस की घोषणा की और राम-सेतु जैसे सांस्कृतिक विरासत के रक्षार्थ कार्य किया।

आपको गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा 'डी. लिट्' की मानद उपाधि प्रदान की गई। साथ ही, गुजरात सरकार द्वारा 'सांस्कृतिक योद्धा' सम्मान से सम्मानित किया गया। आप वैश्विक स्तर पर मंदिरों की स्वतंत्रता और संस्कृति के संवर्धन के मुखर पैरोकार हैं।

Param Pujya Swami Paramatmananda Saraswati

Param Pujya Swami Paramatmanandaji, a senior disciple of H.H. Swami Dayananda Saraswati, holds comprehensive knowledge in Vedanta, Sanskrit, and Yoga under Swami Dayananda's guidance. Swamiji founded the Arsha Vidhya Mandir in Rajkot & Vadodara and serves as the President of the Sivananda Ashram Amdavad. As Convener and General Secretary of the Hindu Dharma Acharya Sabha, he has led initiatives like the Declaration of International Day of Yoga and protection of cultural heritage like Ram Setu. Awarded "D Litt" by Gujarat University and honored with the "Sanskrutik Yoddhha" by the Gujarat Government, Swamiji advocates for temple freedom and cultural preservation worldwide.

उद्घाटन: “श्रीमद् भगवद् गीता”

प्रबोध एवं प्रासंगिकता

परम पूज्य जगदगुरु श्री श्री श्री डॉ. निर्मलानंदनाथ महास्वामी जी

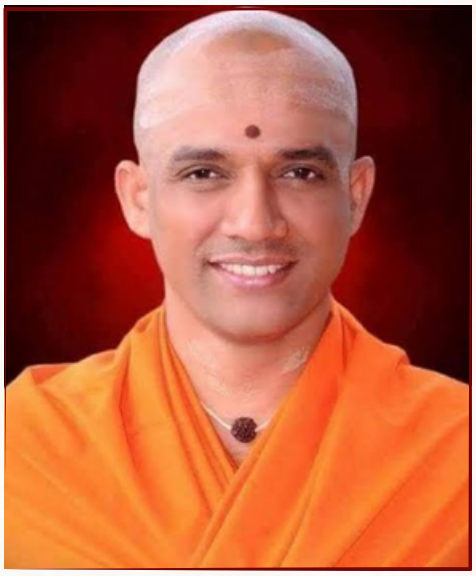

परमपूज्य जगद्गुरु श्री श्री श्री डॉ. निर्मलानंदनाथ महास्वामी जी सन 2013 से श्री आदिचुन्चांगिरि महासंस्थानम मठ के धर्माध्यक्ष हैं। आप इस मठ के 72वें धर्माध्यक्ष हैं। आप चेन्नई आई.आई.टी से इंजीनियरिंग में स्वर्ण पदक प्राप्त हैं। आपने धर्म के एकात्म और नागरिकों के प्रबोधन हेतु " Unity of Religious and Enlightened Citizens (FUREC)संस्था की नींव रखी। साथ ही, आदिचुन्चांगिरि विश्वविद्यालय की स्थापना की है। श्री आदिचुन्चांगिरि शिक्षा ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में, महास्वामीजी एक विशाल शैक्षिक नेटवर्क की देखरेख कर रहे हैं, जो छात्रवृत्ति और मुफ्त शिक्षा प्रदान करता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के आदिचुन्चांगिरि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक फाउंडेशन के माध्यम से विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देकर परंपरा और आधुनिकता को संतुलित रूप प्रदान करते हैं और इस प्रकार अंतर-सांस्कृतिक संवाद को प्रश्रय देने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

His Holiness Jagadguru Sri Sri Sri Dr. Nirmalanandanatha Mahaswamiji

His Holiness Jagadguru Sri Sri Sri Dr. Nirmalanandanatha Mahaswamiji, the 72nd Pontiff of Sri Adichunchanagiri Mahasamsthana Math since 2013, holds a Gold Medal in Engineering from IIT Chennai. Proficient in Sanskrit and the Advaitha School of philosophy, he embraced asceticism in 1998. With Honorary Doctorates from the University of Mysore and Visvesvaraya Technological University, Mahaswamiji founded the Foundation for Unity of Religious and Enlightened Citizens (FUREC) and Adichunchanagiri University. As President of Sri Adichunchanagiri Shikshana Trust, he oversees a vast educational network, providing scholarships and free education. Balancing tradition and modernity, he globally promotes Indian culture through the Adichunchanagiri Cultural and Spiritual Foundation of USA, fostering intercultural dialogue. Mahaswamiji envisions expanding the math's activities across diverse fields for holistic societal upliftment.

स्थापना दिवस

मुख्य अतिथि

डॉ. अजय रांका

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ज़ाईडेक्स ग्रुप

डॉ. अजय रांका नैनो टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में एक प्रख्यात हस्ती हैं। सीमित संसाधनों का संरक्षण और जीवन के लिए जरूरी एवं उपयोगी सतत प्रौद्योगिकी का विकास आपके शोध के महत्वपूर्ण आयाम हैं। आप यू.एस.ए. से पॉलिमर साइंस एंड इंजीनियरिंग में पीएचडी हैं । आपने 1997 में वस्त्र रसायन कंपनी के रूप में ज़ाईडेक्स इंडस्ट्रीज की स्थापना की। हजारों कर्मचारियों के कार्यबल वाली ज़ाईडेक्स आज सड़क, कृषि, वॉटरप्रूफिंग और पेंट्स जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सफलता के नित नए मानक स्थापित कर रही है। चालीस से भी अधिक देशों में अपने विशाल नेटवर्क के बूते इसकी पहचान आज वैश्विक है। ज़ाईडेक्स नवाचार के क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका निभाते हुए सैकड़ों विश्व-स्तरीय उत्पादों का विकास करने में सफल हुयी है और उसकी यह यात्रा अनवरत जारी है।

Dr. Ajay Ranka

Chairman and Managing Director, Zydex Group

Dr. Ajay Ranka has had a long and illustrious career as a pioneer and innovator in the field of nanotechnology based solutions. His focus has always been the development of sustainable technologies for conservation and extension of the life of limited resources. A Ph.D in Polymer Science and Engineering, USA; Dr.Ranka founded Zydex Industries in 1997 as a textile chemicals company. With a growing workforce of 1280+ employees, Zydex has today grown into a multi-division group of companies with interests in several verticals such as Roads, Agriculture, Waterproofing & Paints and a global footprint across more than 40 countries. Having developed 200+ revolutionary and world-class products and solutions across divisions, Zydex continues to innovate with its philosophy of conservation and sustainability.

पहला अध्याय: अर्जुनविषादयोग

प्रो. (डॉ.) संपदानंद मिश्र

निदेशक, मानव विज्ञान केंद्र, डीन - संस्कृति, ऋषिहुड विश्वविद्यालय

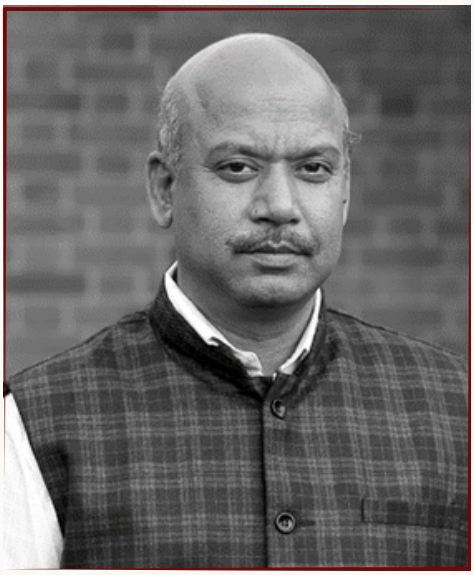

प्रो. (डॉ.) संपदानंद मिश्र संस्कृत और भारतीय ज्ञान प्रणाली के उत्कट अध्येता हैं। सर्वप्रथम डॉ. मिश्र ने 24 घंटे प्रसारण वाले दिव्यवाणी संस्कृत रेडियो की स्थापना की है और अब भी निरंतर इसके प्रबंधन के लिए उत्तरदायी हैं। इन्होने वर्ष 2014 में संस्कृत बालसाहित्य परिषद की स्थापना की। हाल ही में डॉ. मिश्र ने बच्चों के लिए संस्कृत में सप्तवर्ण नामक मासिक ई-पत्रिका शुरू की है। भारत सरकार ने संस्कृत में उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. मिश्र को 2011 में राष्ट्रपति पुरस्कार महर्षि बदरायण व्यास सम्मान से सम्मानित किया है। 2014 में भारत सरकार ने डॉ. मिश्रा को सीनियर फेलोशिप पुरस्कार से सम्मानित किया है। 2017 में जूनियर चैंबर इंटरनेशनल (जेसीआई) इंडिया ने डॉ. मिश्र को संस्कृत भाषा और साहित्य में उनके योगदान के लिए साहित्यिक उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया है। उनकी पुस्तक शनैः शनैः को 2018 में साहित्य अकादमी बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

Prof. (Dr.) Sampadananda Mishra

Director, Centre for Human Sciences, Dean - Culture, Rishihood University

Prof. (Dr.) Sampadananda Mishra has made significant contributions in the field of Sanskrit and the Indian Knowledge System. He served as the Associate Editor of the Collected Works of Vasishtha Kavyakantha Ganapati Muni and founded Divyavani Sanskrit Radio in 2013. In 2014, he established the Samskrita Balasahitya Parishad, focusing on Sanskrit children's literature. Dr. Mishra has received many prestigious awards, including the President's award Maharshi Badarayna Vyasa Samman in 2011 and the Kendra Sahitya Akademi Bal Puraskar in 2018.

दूसरा अध्याय: सांख्ययोग

प्रोफेसर भारतेंदु पांडे
प्रभारी, संस्कृत विभाग, दक्षिणी परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो.पांडेय संस्कृत काव्यशास्त्र में विशेषज्ञता रखते हैं। अपने 27 वर्षों के शिक्षण और शोध अनुभव के साथ उन्होंने अब तक पीएचडी के लिए 15 शोध विद्वानों का निर्देशन किया है। उनकी तीन मौलिक और तीन सम्पादित पुस्तकें हैं। उन्हें 2015 में काशी विद्वत परिषद द्वारा विद्वद्भूषण पुरस्कार और 2023 में अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन द्वारा संस्कृत-गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

Prof. Bhartendu Pandey
Director, Centre for Human Sciences, Dean - Culture, Rishihood University

Prof. Pandey holds specialisation in Sanskrit Poetics. With a total teaching experience of 27 years and research experience of 24 years, he has supervised 15 research scholars for Ph.D. Degree. Prof. Pandey is the author of 3 books and has edited 3 books. He has been conferred with the Vidwadbhooshana Award by Kashee Vidwat Parishad in 2015 and the Sanskrit-Gaurava Award by Akhil Bharateeya Sanskrit Sahitya Sammelana in 2023.

तीसरा अध्याय: कर्मयोग

प्रो ओम नाथ बिमली
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो.ओम नाथ बिमली व्याकरण, भाषा-दर्शन और भारतीय दर्शनशास्त्र के विद्वान हैं । आपका शिक्षण अनुभव 28 वर्षों से अधिक है । आपने 18 पीएच. डी. और 15 एम.फिल विद्यार्थियों का शोध निर्देशन किया है । आप हांकुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, कोरिया के भारतीय अध्ययन विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर थे । वर्तमान में आप दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू अध्ययन केंद्र के निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। आपका सबसे अद्यतन प्रकाशन 'नेचर ऑफ सेल्फ: ए क्रिटिक ऑफ द वेदान्तिक मेटाफिजिक्स ऑफ डायवर्सिटी एंड यूनिटी' है।

PROF. OM NATH BIMALI
Head of the Department, Department of Sanskrit, University of Delhi

Prof. Om Nath Bimali specialises in Paninian Grammar, Philosophy of Language and Indian Philosophy. With teaching experience of more than 28 years, he has supervised the award of 18 PhD scholars and 15 M.Phil scholars. He was Visiting Professor at the Department of Indian Studies, Hankuk University of Foreign Studies, Korea and is serving as the Director, Center for Hindu Studies, University of Delhi. His most recent publication is Nature of Self: A critique on the Vedantic Metaphysics of Diversity and Unity as Reflected in the Bhashyarkaprakasha of Ram Ray Kavi, a 20th Century Sub-commentary on Bhagvadgita.

चौथा अध्याय: ज्ञानकर्मसंन्यासयोग

प्रो. ब्रजेश पाण्डेय
संस्कृत और भारतीय अध्ययन संस्थान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. बृजेश पांडेय योग-विद्या के विशेषज्ञ है। आपके पास 25 वर्षों का अध्यापन अनुभव है। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपको वर्ष 2015 में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, उत्तराखंड द्वारा 'पुरुषोत्तम मलकानी शिक्षक सम्मान' प्रदान किया गया।साथ ही, आपको श्री सनातन सेवा समिति , नैनीताल द्वारा 'काव्यरत्नम' सम्मान से सम्मानित किया गया।

PROF. BRAJESH PANDEY
School of Sanskrit and Indic Studies, Jawaharlal Nehru University

Prof. Brajesh Pandey specializes in Yoga, Vedanta and shaiva philosophy. He has 25 years of teaching experience and has authored 4 books. He was conferred with the State-level Purushottam Melkani Teacher's award by Rashtriya Shaikshik Maha Sangh, Uttrakhand Chapter in 2015 and was honoured by Sri Sanatan Seva Samiti, Nainital and Kavyaratnam Sansthan, Nainital.

पांचवां अध्याय: कर्मसंन्यासयोग

प्रो. सच्चिदानंद मिश्र
सदस्य-सचिव, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद

प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्र भारतीय तर्क और ज्ञानमीमांसा, नव्य-न्याय, अद्वैतवेदांत, शुद्धाद्वैतवेदांत, कश्मीरी शैव संप्रदाय और भारतीय सौंदर्यशास्त्र के वैचारिक विकास के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् हैं। वे संस्कृत में प्राचीन दर्शनशास्त्र और साहित्य के प्रकांड विद्वान हैं। आप 2010 से बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में दर्शनशास्त्र और धर्म के प्रोफेसर हैं। आपने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), सदाशिव परिसर, पुरी में व्याख्याता के रूप में कार्य किया। आपने 11 प्रसिद्ध पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है। प्रख्यात शोध पत्रिका, आन्वीक्षिकी (खंड 7 से 11) का भी संपादन किया है। आपके विभिन्न पत्रिकाओं में 50 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। आप वर्ष 2009 के महर्षि बदरायण व्यास सम्मान (राष्ट्रपति पुरस्कार) से सम्मानित हुए हैं, इसके अतिरिक्त आपको 2012 में पेरिस के सोरबोन नोवेल्ले विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित संस्कृत चेयर के लिए आईसीसीआर द्वारा चुना गया था।

Prof. Sachchidanand Mishra
Member-Secretary, Indian Council of Philosophical Research

Prof. Sachchidananda Mishra is a well-known academician in the areas of Indian Logic and Epistemology, Conceptual development of Navya-Nyāya, AdvaitaVedānta, ŚuddhādvaitaVedānta, Kashmiri Śaiva Schools and Indian Aesthetics. He is a professor of Philosophy and Religion at the Banaras Hindu University, Varanasi. He has authored and edited around 11 noted books, has edited the eminent research journal, Anvikṣiki (Vol. 7 to 11) and published more than 50 research papers. He has been a recipient of the Maharṣhi Bādrāyaṇ Vyās Sammān (Presidential Award, 2009) and selected by the ICCR for the prestigious Sanskrit Chair at Sorbonne Nouvelle University, Paris in 2012.

छठवां अध्याय: आत्मसंयमयोग

डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय

प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्र भारतीय तर्क और ज्ञानमीमांसा, नव्य-न्याय, अद्वैतवेदांत, शुद्धाद्वैतवेदांत, कश्मीरी शैव संप्रदाय और भारतीय सौंदर्यशास्त्र के वैचारिक विकास के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् हैं। वे संस्कृत में प्राचीन दर्शनशास्त्र और साहित्य के प्रकांड विद्वान हैं। आप 2010 से बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में दर्शनशास्त्र और धर्म के प्रोफेसर हैं। आपने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), सदाशिव परिसर, पुरी में व्याख्याता के रूप में कार्य किया। आपने 11 प्रसिद्ध पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है। प्रख्यात शोध पत्रिका, आन्वीक्षिकी (खंड 7 से 11) का भी संपादन किया है। आपके विभिन्न पत्रिकाओं में 50 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। आप वर्ष 2009 के महर्षि बदरायण व्यास सम्मान (राष्ट्रपति पुरस्कार) से सम्मानित हुए हैं, इसके अतिरिक्त आपको 2012 में पेरिस के सोरबोन नोवेल्ले विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित संस्कृत चेयर के लिए आईसीसीआर द्वारा चुना गया था।

Dr. Pramod Kumar Sharma,
Associate Professor, School of Sanskrit and Indic Studies
Jawaharlal Nehru University

Dr. Pramod Kumar Sharma, an accomplished Sanskrit scholar, commenced his teaching journey in Dwarka, Gujarat, and later served as a lecturer in secondary Sanskrit education in Barmer, Rajasthan. Having held positions like Assistant Professor and Associate Professor at Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Sanskrit University, Jaipur, he excelled as the Head of the Grammar Department. Recognized with prestigious awards, including Vyakaran Kesari and Abhinav Panini, Dr. Sharma's significant contributions include the creation of the Sanskrit epic "Gopangane Vaibhavam." Muktswadhyapeeth National Sanskrit Institute, Janakpuri, Delhi, has published over 50 of his grammar lessons in distance education.

सातवां अध्याय: ज्ञानविज्ञानयोग

डॉ. कृष्ण मोहन पांडे

एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ संस्कृत एंड इंडिक स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

डॉ. पांडे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से संस्कृत में स्नातकोत्तर में स्वर्ण पदक से पुरस्कृत हैं। डॉ. पांडे ने एसजीए संस्कृत डिग्री कॉलेज, ऊना, एचपी में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्य किया है। आप महर्षि वशिष्ठ ई. गुरुकुलम, काउंसिल ऑफ इंडिक स्टडीज एंड रिसर्च (सीआईएसआर), नई दिल्ली के मानद निदेशक रहे हैं साथ ही आपने सर्व धर्म महासभा के राष्ट्रीय सचिव के पद को भी सुशोभित किया है। आपकी सात पुस्तकें और पचास से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हैं। आपने 2010 में गीता चिंतक पुरस्कार, 2014 में भारत संस्कृत अभियानम द्वारा संस्कृत सेवा सम्मान, 2016 में प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान और 2023 में अंतर्राष्ट्रीय वाग्भूषण सम्मान प्राप्त किया है। आप नव सृजन हिंदी पत्रिका के प्रधान संपादक, एसजीए संस्कृत कॉलेज, ऊना, हिमाचल प्रदेश के स्मारिका के संपादक और समाज धर्म मासिक पत्रिका के सहायक संपादक हैं।

Dr. Krishna Mohan Pandey

Associate Professor, School of Sanskrit and Indic Studies
Jawaharlal Nehru University

Dr. Krishna Mohan Pandey, a Gold Medalist in Sanskrit and has served as an Assistant Professor and Honorary Director at institutions like SGA Sanskrit Degree College and Maharshi Vashistha e-Gurukulam. He is the National Secretary of Sarva Dharma Mahasabha and Director General of the Academic Council at Council of Indic Studies and Research. Dr. Pandey has authored seven books, published 50+ research papers, delivered 200 lectures, and received several awards, including the Gita Chintak Puraskar in 2010, the Sanskrit Sewa Samman in 2014, the Pratibhashali Rachanakar Samman in 2016 and the International Vagbhushan Samman in 2023. He serves as the Editor in Chief for Nav Srijan Hindi Magazine and holds editorial roles in other publications.

आठवां अध्याय: अक्षरब्रह्मयोग

डॉ. समीर कुमार मिश्र
जाकिर हुसैन (इवनिंग) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. समीर कुमार मिश्र, भारतीय और पाश्चात्य धर्म एवं दर्शन के अध्येता हैं। आपने देश और विदेश में दर्जनों शोध पत्रों के माध्यम से योगदान दिया है।

Dr. Sameer Kumar Mishra
Zakir Hussain (Evening) College, University of Delhi

Dr. Sameer Kumar Mishra is a constant researcher in religion and philosophy; East and West. He contributed a dozen research papers in India and abroad.

नवां अध्याय: राजविद्याराजगुह्ययोग

श्री ऋषि कुमार

उपाध्यक्ष उत्तरी भारत मंडल परिषद, इस्कॉन

श्री ऋषि कुमार पीआर परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज, अध्यक्ष इस्कॉन, भारत के शिष्य हैं, और पिछले 23 वर्षों से इस्कॉन की सेवा कर रहे हैं। वह 2009 से इस्कॉन दिल्ली में रेजिडेंट मॉन्क हैं।

आप प्रबंधन में परास्नातक हैं और आपके पास द इंडियन एक्सप्रेस और द हिंदुस्तान टाइम्स में वरिष्ठ प्रबंधन स्तर पर 13 साल का कॉर्पोरेट अनुभव है।

आप विज्ञान एवं अध्यात्म संस्थान, भक्तिवेदांत संस्कृति और शिक्षा अकादमी और अन्नामृता फाउंडेशन, जोकि प्रतिदिन दस लाख मध्याह्न भोजन वितरित करती है, के ट्रस्टी हैं। श्री ऋषि कुमार इस्कॉन इंडिया के सचिव एवं विधिक सलाहकार भी हैं। आप जीबीसी कॉलेज फॉर स्पिरिचुअल लीडरशिप में ग्लोबल टॉपर रह चुके हैं।

Shri Rishi Kumar Das

Vice-President ISKCON Delhi

Vice-Chairman Northern India Divisional Council, ISKCON

Shri Rishi Kumara pr, a devoted disciple of HH Gopal Krishna Goswami Maharaja, has served ISKCON for 23 years and has been a Resident monk at ISKCON Delhi since 2009. With an MBA and 13 years of corporate experience at the Indian Express and the Hindustan Times in senior management roles. He is a Trustee of Annamrita Foundation, Institute of Science and Spirituality, and Bhaktivedanta Academy of Culture and Education. He serves as the Secretary, Organizational Structure and Accountability and Legal matters, for ISKCON India. Additionally, he achieved the Global Topper title at GBC College for Spiritual Leadership.

दसवां अध्याय: विभूतियोग

प्रोफेसर सुरेश भल्ला

नागर अभियांत्रण विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली (आईआईटी दिल्ली)

प्रोफेसर सुरेश भल्ला स्मार्ट संरचनाओं, जैव-यांत्रिकी एवं बांस प्रौद्योगिकी के सतत विकास के क्षेत्र में कार्यरत है। आपने अस्सी से अधिक पत्र पत्रिकाओं और दो पुस्तकों का लेखन किया है। पुरस्कारों में स्कोपस यंग साइंटिस्ट अवार्ड 2014, शिक्षण उत्कृष्टता पुरस्कार (2011) प्राप्त हैं और 2020 से विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों में शामिल हैं। आपने आईआईटी दिल्ली में स्मार्ट स्ट्रक्चर्स एंड डायनेमिक्स लैब की स्थापना की है।

Prof. Suresh Bhalla

Department of Civil Engineering
Indian Institute of Technology Delhi (IITD)

Prof. Suresh Bhalla specializes in smart structures, structural health monitoring, electro-mechanical impedance, bio-mechanics, piezoelectric energy harvesting, and sustainable construction with engineered bamboo. With over 80 papers in international SCI indexed journals and 85 in conferences/workshops, he co-authored two books and contributed to three others. His influential paper on RC structures monitoring has received over 260 citations in Web of Science and 391 in SCOPUS. Awards include the SCOPUS Young Scientist Award 2014, teaching excellence award (2011), and recognition among the top 2% of world scientists since 2020. He founded the Smart Structures and Dynamics Lab at IIT Delhi and serves as the founding President of the Indian Structural Health Monitoring Society.

ग्यारहवां अध्याय: विश्वरूपदर्शनयोग

डॉ. बलदेवानंद सागर

विश्व संस्कृत मीडिया परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष

डॉ. बलदेवानंद सागर संस्कृत, पत्रकारिता और रंगमंच के प्रतिष्ठित विद्वान हैं। आप दूरदर्शन समाचार पर संस्कृत के प्रथम और ऑल इंडिया रेडियो पर तृतीय समाचार वाचक रहे हैं । राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली में आप एक विजिटिंग फैकल्टी के रूप में अनुवादन , श्रुतलेखन, और कौशल संवर्धन का कार्य कर रहे हैं। कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन के पूर्व निदेशक के रूप में आपने 'इंटरनेशनल योग डे कॉमन प्रोटोकॉल बुक' का अनुवाद किया और संस्कृत पत्रकारिता पर पहली संस्कृत पुस्तक लिखी है। अप्रैल 2015 से, उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए डीडी-व्यास चैनल पर 'संस्कृत सीखें: आधुनिक बनें' शीर्षक से 120 से अधिक लाइव व्याख्यान आयोजित किए हैं। इसके अतिरिक्त, वह मई 2017 से ऑल इंडिया रेडियो पर प्रधान मंत्री की मन की बात का संस्कृत में अनुवाद और प्रसारण कार्य में संलग्न हैं।

Dr. Baldevanand Sagar

National President of World Sanskrit Media Council

Dr. Baldevanand Sagar is a distinguished scholar in Sanskrit, Journalism, and Theatre. Notably, he was the first Sanskrit anchor on Doordarshan News globally and the third to deliver news on All India Radio. As a visiting faculty at the National School of Drama, New Delhi, he imparts knowledge in translation, dictation, presentation, and soft skills. Dr. Sagar, the former Director of Kalidasa Sanskrit Academy, Ujjain, has translated the 'International Yoga Day Common Protocol Book' and authored the first Sanskrit book on Sanskrit Journalism. Since April 2015, he has conducted over 120 live lectures titled 'Learn Sanskrit: Be Modern' on DD-Vyas Channel for Higher Education. Additionally, he translates and broadcasts Prime Minister's Mann Ki Baat into Sanskrit on All India Radio since May 2017.

बारहवां अध्याय: भक्तियोग

श्री सुशांत भारती
फैकल्टी, इंडिका कोर्सेस

सुशांत भारती पेशे से संरक्षण वास्तुकार और लेखक हैं। आपके शोध-क्षेत्र ब्रज की सांस्कृतिक विरासत हैं। आप पूर्व में उत्तर प्रदेश और लद्दाख में सांस्कृतिक विरासत के प्रलेखिकरण हेतु राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के साथ दो वर्ष काम कर चुके है। इसके साथ ही वह काशी विश्वनाथ और केदारनाथ प्रांगण में प्रस्तावित नए संग्रहालयों के लिए प्रारंभिक रूपरेखा निर्माण हेतु भी कार्य कर चुके है।आपने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय स्टीम नेविगेशन कंपनियों की भूमिका पर नेशनल बुक द्वारा प्रकाशित "सागर के सेनानी" नाम से एक पुस्तक लिखी है। मंडला प्रकाशन द्वारा प्रकाशित उनकी दूसरी पुस्तक मदन मोहन: एन इंचेंटिंग सागा वृंदावन में मदन मोहन मंदिर पर आधारित है। वह पूर्व में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ आयरलैंड और ग्रेट ब्रिटेन के तथा सोसाइटी ऑफ आर्किटेक्चरल हिस्टोरियंस, शिकागो के फेलो रह चुके है। वर्तमान में वह रॉयल हिस्टोरिकल सोसाइटी, लंदन के एसोसिएट फेलो हैं तथा कलकत्ता स्थित भक्तिवेदंत रिसर्च सेंटर में शोधार्थी के रूप में कार्यरत है।

Shri Sushant Bharti
Faculty, Indica Courses

Sushant Bharti, a Conservation Architect and Researcher in New Delhi, specializes in Indian temple architecture and the cultural heritage of Braj. Formerly with the National Museum, he documented heritage in Uttar Pradesh and Ladakh. Bharti, a PM YUVA Fellowship recipient for an Indian Independence movement book, holds the "Ideas Research Fellowship 2023" from the Society of Architectural Historians, Chicago. Recognized by the Royal Asiatic Society of Ireland and Royal Historical Society, London, he advocates for Braj's tangible heritage preservation, contributing to new museum designs for Kashi Vishwanath and Kedarnath.

तेरहवां अध्याय: क्षेत्र-क्षेत्रज्ञविभागयोग

डॉ. सौरभ जी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. सौरभ जी भारतीय पुरालेख, कालक्रम और संस्कृति के विशेषज्ञ हैं। 10 वर्षों के शिक्षण अनुभव के साथ,आप 20 जनवरी, 2022 से दिल्ली विश्वविद्यालय में डिप्टी प्रॉक्टर के रूप में कार्यरत हैं। आपके 5 शोध पत्र प्रकाशित हैं और आपने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में सात शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए मार्गदर्शक के रूप में आपने कार्य किया है। संस्कृत अध्ययन में आपके महत्वपूर्ण योगदान के लिए भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय ने आपको 'शिक्षा भारती सम्मान, 2022' से सम्मानित किया है और दिल्ली संस्कृत अकादमी ने भी आपको पुरस्कृत किया है।

Dr. Saurabh Ji

Assistant Professor, Department Of Sanskrit, University Of Delhi

Dr. Saurabh Ji specializes in Indian Epigraphy, Paleography, Chronology, and Indian Culture. With 10 years of teaching experience, he is serving as the Deputy Proctor at the University of Delhi since January 20, 2022. Dr. Saurabh has published 5 research papers in Refereed/Peer-Reviewed Journals, presented 7 papers in national and international conferences, and served as a Resource Person for various courses. He received the 'Shiksha Bharti Samman, 2022' from the Ministry of Micro, Small, and Medium Enterprises, Government of India, along with awards from Delhi Sanskrit Academy for his significant contributions to Sanskrit studies.

चौदहवां अध्याय: गुणत्रयविभागयोग

प्रोफेसर श्री सत्यपाल सिंह
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रोफेसर श्री सत्यपाल सिंह व्याकरण, भारतीय भाषा विज्ञान, भारतीय दर्शन और ब्राह्मी व शारदा लिपियों में विशेषज्ञ हैं तथा आपके पास 32 वर्षों से अधिक का शिक्षण अनुभव है। आप स्कूल ऑफ इंडोलॉजिकल स्टडीज, महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, मॉरीशस में विजिटिंग स्कॉलर रहे है। आपकी पांच पुस्तके और पच्चीस शोध लेख प्रकाशित हैं। आपने इग्नू पाठ्यक्रम के लिए व्याख्यान रिकॉर्ड किए हैं। आप विभिन्न शैक्षणिक समितियों और बोर्डों के सदस्य हैं। आप 1989 में स्थापित गुरुदत्त विद्यार्थी कल्याण समिति के संस्थापक सदस्य और कोषाध्यक्ष हैं, जो कि पारंपरिक संस्कृत छात्रों को उच्च अध्ययन में सहायता करने के लिए गठित की गई थी। आप जाकिर हुसैन कॉलेज और भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के शासी निकाय से सम्बद्ध रहे है।

Prof. (Dr.) Satyapal Singh
Professor, Department Of Sanskrit, University Of Delhi

Prof. Singh specializes in Paninian Grammar, Indian linguistics, Indian Philosophy, and Brahmi & Sharda Scripts, boasting over 32 years of teaching experience. Invited as a Visiting Scholar at the School of Indological Studies, Mahatma Gandhi Institute, Mauritius, and an International Faculty under the Virtual Mobility Scheme, he teaches online modules. Authoring 5 books, contributing to edited books, and publishing 25 research articles, Prof. Singh has recorded lectures for IGNOU, presented papers in national and international conferences, and is a member of various academic committees and boards. He is the Founder Member and Treasurer of Gurudatt Vidyarthi Kalyan Samiti, established in 1989 to aid traditional Sanskrit students in higher studies. Prof. Singh has also served on the governing bodies of Zakir Husain College and Bhagini Nivedita College, University of Delhi.

पंद्रहवां अध्याय: पुरुषोत्तमयोग

डॉ संदीप चटर्जी
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग
शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

आधुनिक भारतीय इतिहास के छात्र और शोधकर्ता होने के साथ साथ आप वैष्णव दर्शन और इतिहास में रुचि रखने वाले एक अभ्यासी वैष्णव हैं। हाल ही में आपने "गौड़ीय वैष्णव ग्रंथों में हिंदू इस्लामिक विवाद और हिंदू प्रतिरोध" शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया है।

Dr. Sandeep Chatterjee
Assistant Professor, Department of History
Shaheed Bhagat Singh College, University of Delhi

A student and researcher of modern Indian history, He is a practising Vaishnav interested in Vaishnav philosophy and history. Recently he presented a paper titled “गौड़ीय वैष्णव ग्रंथों में हिंदू इस्लामिक विवाद और हिंदू प्रतिरोध”।

सोलहवां अध्याय: दैवासुरसम्पद्विभागयोग

श्री सनोज कुमार
वैज्ञानिक, डीआरडीओ

श्री सनोज कुमार ने 2002 में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बीई पूरा किया और 2003 में डीआरडीओ में शामिल हो गए। आपने विभिन्न यू.ए.वी./ड्रोन, मिसाइलों और दिशा-निर्देशित बमों के निर्माण क्षेत्र में कार्य किया है। आप ज्योतिष आचार्य और एक्यूप्रेशर थेरेपी में गोल्ड मेडलिस्ट हैं। आप 2005 से 'कृष्ण चेतना' का अभ्यास कर रहे हैं।

Shri Sanoj Kumar
Scientist, DRDO

Shri Sanoj Kumar completed BE in Electrical Engineering in 2002 and joined the DRDO in 2003. He has worked for different UAV/Drones, Missiles and intelligent Bombs. He is a Gold Medalist in Jyotisha Acharya and a Gold Medalist in Acupressure Therapy. Shri Sanoj Kumar has been practicing Krishna consciousness since 2005.

सत्रहवां अध्याय: श्रद्धात्रयविभागयोग

प्रो गिरीश चंद्र पंत
संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रो. गिरीश चंद्र पंत संस्कृत काव्यशास्त्र, आधुनिक संस्कृत साहित्य, वैदिक ज्योतिष और वास्तुशास्त्र (भारतीय वास्तुकला प्रणाली) के विशेषज्ञ हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय और जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 35 वर्षों से अधिक का शिक्षण अनुभव है और आपके कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन हैं। आपको 2015 में दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत समाराधक सम्मान से सम्मानित किया गया है। आपने 2003-2007 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के मानविकी अनुसंधान अध्ययन बोर्ड के सदस्य के रूप में और सीबीसीएस के लिए गठित राष्ट्रीय विशेषज्ञ समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया है।

Prof. Girish Chandra Pant
Department of Sanskrit, Jamia Millia Islamia

Prof. Girish Chandra Pant Specializes in Sanskrit Poetics, Modern Sanskrit Literature, Vedic Astrology and Vastushastra (Indian Architecture System). With more than 35 years of teaching experience in University of Delhi and Jamia Millia Islamia. He has many national and international publications under his name. Prof. Pant was conferred with the Sanskrit Samaradhaka Sammana by the Delhi Sanskrit Academy in 2015. He has served as a Member of the Board of Research Studies in Humanities, University of Delhi, 2003-2007 and Member of the National Expert committee for CBCS constituted by UGC in 2015.

अठारहवां अध्याय: मोक्षसंन्यासयोग

प्रोफेसर रमेश बिजलानी

चिकित्सक, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, योग और पोषण के विशेषज्ञ, एक उत्कृष्ट लेखक और प्रेरणादायक वक्ता

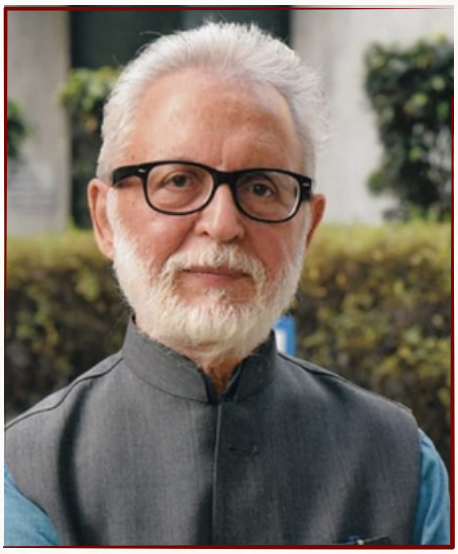

प्रोफेसर रमेश बिजलानी, पूर्व विभागाध्यक्ष, फिजियोलॉजी विभाग, एम्स 1992 में इंटीग्रल योग के क्षेत्र की ओर उन्मुख हुए। तदोपरांत सन 2000 में एम्स में इंटीग्रल हेल्थ क्लिनिक की स्थापना की। आपने 2005 में श्री अरबिंदो और माता जी की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली। 2006 से श्री अरबिंदो आश्रम में रहते हुए आपने योग, शिक्षा और आध्यात्मिकता के लिए एक ऑनलाइन मंच 'YES' की स्थापना की है। आपकी 25 पुस्तकें, 200 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हैं और आपने 250 से अधिक ब्लॉग लिखे हैं।

आपको स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान (एसवीवाईएएसए), बैंगलोर द्वारा योग में मानद डॉक्टरेट की उपाधि और कैवल्यधाम, लोनावला से स्वामी कुवलयानंद पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

Prof. Ramesh Bijlani

Medical doctor, scientist, educationist, expert in yoga and nutrition, a prolific writer and inspirational speaker

Prof. Ramesh Bijlani, former Professor and Head of the Department of Physiology at AIIMS, turned to Integral Yoga in 1992. He established the Integral Health Clinic at AIIMS in 2000, offering yoga-based lifestyle courses. He took voluntary retirement in 2005 to find more time for disseminating the teachings of Sri Aurobindo and the Mother. Residing in the Sri Aurobindo Ashram since 2006, he founded YES, an online platform for Yoga, Education and Spirituality. He has authored 25 books, over 200 scientific papers, 50 popular articles, and 250 blogs. He has been awarded an honorary doctorate in yoga by Swami Vivekananda Yoga Anusandhana Samsthana (SVYASA), Bangalore, and Swami Kuvalayananda Puraskar from Kaivalyadhama, Lonavala.

ORGANISING BOARD

Conceptualisation

Dr. Jigar Inamdar, Chairperson, Governing Body, Ramanujan College

Prof. S.P. Aggarwal, Principal, Ramanujan College

Programme Director

Prof. K. Latha, Director IQAC, Ramanujan College

Management & Resource Person Liaising Committee

Dr. Neetanjali Khari, Assistant Professor, Department of Philosophy

Dr. Vikas Kumar, Assistant Professor, Department of History

Ms. Archana Jamatia, Assistant Professor, Department of Philosophy

Dr. Bebi, Librarian

Content Creation & Communication Committee

Dr. Shruti Jain, Assistant Professor, Department of English

Dr. Parul Yadav, Assistant Professor, Department of Commerce

Dr. Preeti Bansal, Assistant Professor, Department of Management Studies

Dr. Rachita Garg, Assistant Professor, Department of Management Studies

Media & Registration Team

Ms. Inakshi, Assistant Professor, Department of Commerce

Mr. Prakhar Wadhwa , Assistant Professor, Department of Commerce

Dr. Shailendra Pathak, Assistant Professor, Department of Political Science

Creative & Designing Committee

Dr. Aparajita Mazumdar, Assistant Professor, Department of Political Science

Dr. Dinkar Singh, Assistant Professor, Department of Hindi

Ms. Shipra Yadav, Assistant Professor, Department of Political Science

Technical Committee

Dr. Nikhil Kumar Rajput, Assistant Professor, Department of Computer Science

Mr. Vipin Kumar Rathi, Assistant Professor, Department of Computer Science

Dr. Ashish Shukla, Assistant Professor, Department of Statistics

Dr. Sachin Tomer, Assistant Professor, Department of Statistics

Food & Logistics Committee

Dr. Vivek Kumar, Assistant Professor, Department of Philosophy

Dr. Vikas Kumar, Assistant Professor, Department of History

For further information, write to us at: gita_iks@ramanujan.du.ac.in